Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बजरंगबाण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बजरंग बाण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेशायनमः॥ चौपाई॥ जेहनुमानजीसचाहितकारी।
सुनलीजै प्रभुप्रारजहमारी॥ जनकेकाजविलम्वनकी
जै। आतुरदौरीमहासुखदीजै॥ जैसेकूदिसिन्धुवहिपारा।
सुरसावदनपैठिविस्तारा॥ आगेजाइलङ्किनीरोकी।
मारेहुलातगईसुरलोकी॥ जायविभीषणकोसुखदीन्हा।
सीतानिरखिपरमपदलीन्हा॥ वागउजारिसिन्धुमहं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कोरा। अति आतुर यम करि जोरा॥ अक्षय कुमार को मारि
संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा। लह समान लंक जरि गइ।
जै जै धुनि सुरपुर में भइ॥ अब विलंब केहि कारण स्वामी।
कृपा करहु उर अंतरयामी॥ जै जै जै जगदंबे भवानी।
आतुर ह्वै दुख करहु निवाना। जै गिरिधर जै जै सुखसागर।
सुर समूह समरथ भटनागर। ओंहनुमंत हनुमंत हनुमंतहि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ठीला॥ वेरिहि मारु वज्र की कीला। गदा वज्र ले वैरिहि मारो॥
महाजप भूत सब काँपे। ओंकार हुंकार सबही थापे॥
वज्र गदा हनु विलँब न लावो। ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा॥
ओं हं हं हं अंजनि सुत वीरा। सत्य होहु हरि सपथ पाई के॥
राम दूत धरु मारु धाई के। जैजे जैजे हनुमन्त अभय दा॥ दुख
पावत जन केहि अपराधा। पूजा जप तप नेम अचारा॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न हिं जानतहौं दासनुसारा॥ वन उपवन मग गिरि गृह माहीं।
तुम्हरे बलहम डर कछु नाहीं॥ पाय पखारि जो रिषि नावों। यहि
श्रमहर श्रमबड़ हिमोहि नावों॥ जे श्रम दुख मुनिकुमार बलवन्ता।
हरहिं सुवन सीरहनु मन्ता॥ बदन कमलदनु जुकुल चाला
कमल सहाय सदा प्रतिपालक॥ भूत प्रेत पिसाच निसाचर
श्रमनि बेताल काल सारि मर। इहें मारुतो हि सपनहुं डरकी॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

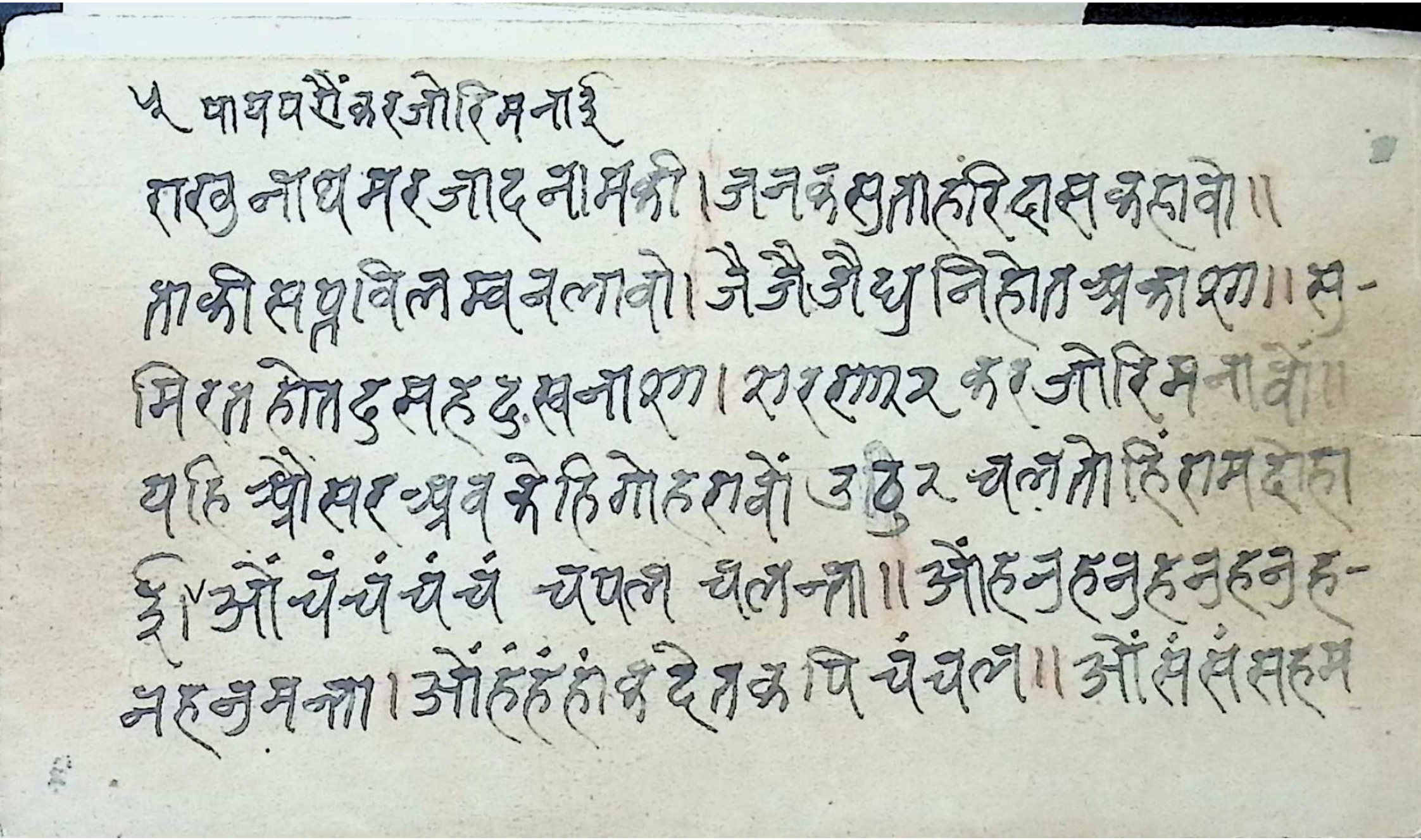

ॐ घायव हैं कर जोरि मनाई
सरब नाथ मरजाद नामकी। जन के सुतां हरि दास कलावो॥
ताकी सपूरि विलम्ब न लावो। जै जै जै धु निहाल अकाल॥ सु-
मिरा होत दुसह दुःख नाश। सरणागत कर जोरि मनावों॥
यहि औसर अब के हि मोहि रावों उठ चलो हिंगलाज दरसा
इ॥ ओं चं चं चं चं चपल चलना॥ ओं हनु हनु हनु हनु ह-
नु हनु मना। ओं हं हं हं दे नक पि चं चल॥ ओं सं सं सहम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ ता हि कहो फिरि कौन उबारे
पत्ता ने खिलदल। ध्रुव ने जो तुरत उबारो॥ सुमिरतहो॰
य ध्रुव ने देहमारो। यह वज्रङ्ग वाला जे हि मोरे॥ पाठ करे
वज्रङ्ग वाला को॥ हनुमान रक्षा करे ध्रान को। यह वज्रङ्ग
वाला जो जापे। ता सो भूत प्रेत सब काँपे ध्रुव पद य ध्रुव जो
हमेशा ता के तन ने हिं रहे कलेश॥ दोहा॥ प्रेम प्रीत धरि क
भि भजो। सदा धरे उर ध्यान। ते हि के कारज सकल शुभ सिद्धि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ केरैहनुमान्॥ इतिश्रीमज्जरङ्गबालासमाप्त॥ इसबालके
पढिडूणमनानवरा शुक्लनेधो॥ वृन्दावनमिश्रशुभ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

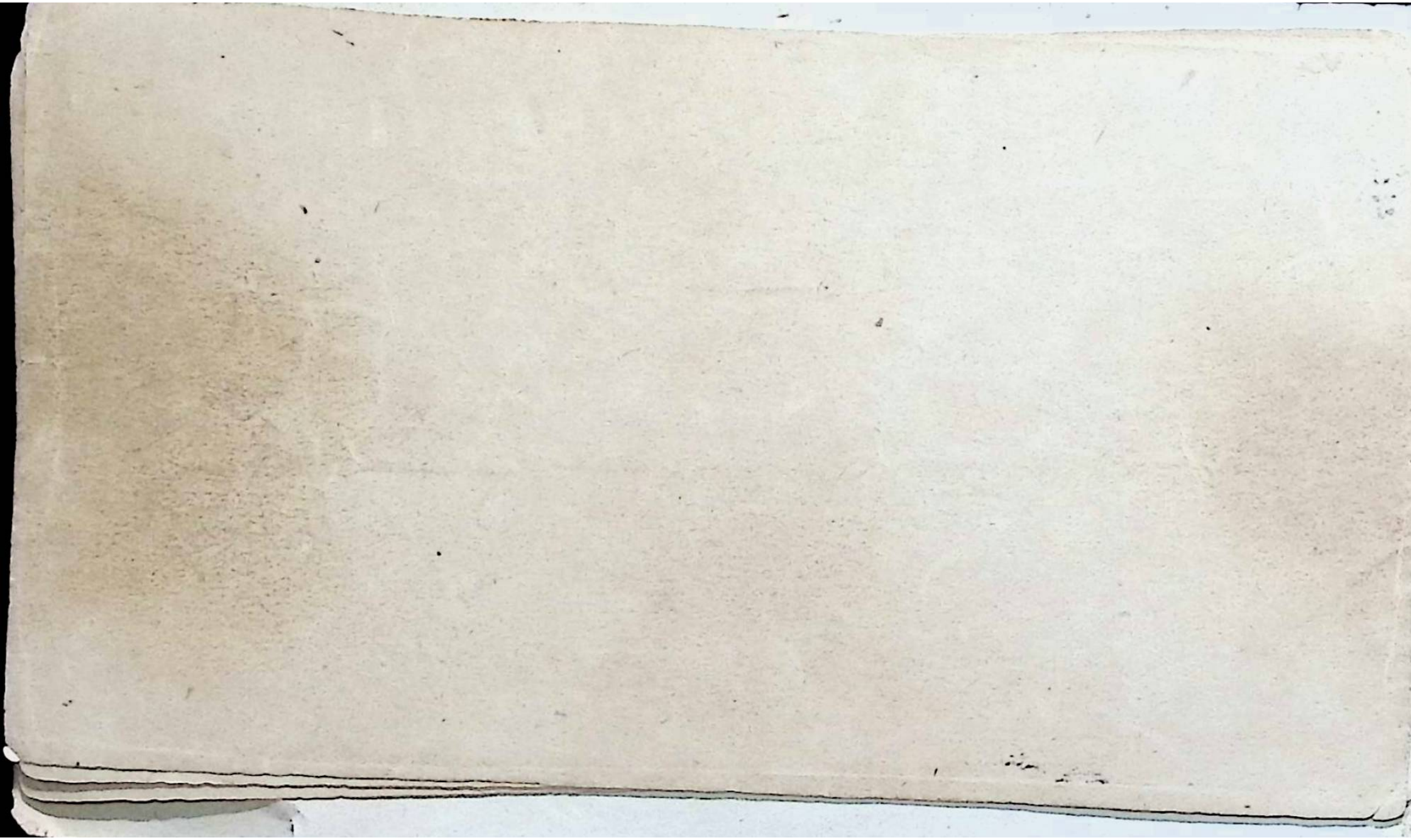

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection